ज्येष्ठ-आषाढ़, विक्रम संवत- २०७१ (जून 2014) मूल्य - 10 रुपए
राष्ट्रबोध

ओडिशा के आदिवासियों का जीवन संवार रहे डॉ सामंत

बच्चों को बंदूक छुड़ाकर, थमाई कलम

डॉ वरुण सूत्रा

हाल ही में अंडमान और निकोबार की आदिवासी प्रजाति के कुछ पुरुष सदस्यों ने अन्य लोगों द्वारा उनकी महिलाओं के साथ किए जाने वाले यौन शोषण का खुलासा कर के सब को चौंका दिया। भारत में लगभग 700 आदिवासी प्रजातियां हैं। भारत सरकार ने संविधान में उन्हें अनसूचित जनजाति का दर्जा देकर, उनके विशेष अधिकारों को संरक्षित रखा है। लेकिन दुख की बात है कि जिन जनजातियों को संरक्षण प्रदान करने की पैरवी हमारा संविधान करता है, आज वही सबसे ज्यादा शोषित वर्ग बन चुका है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक असंख्य ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां इन लोगों की मासूमियत और ईमानदारी का लाभ उठा के कई मौकापरस्त लोग अपना उल्लू सीधा करते मिल जाएंगे। इन जनजाति के युवाओं को आसानी से बरगला कर इन्हें हिंसा के मार्ग पर धकेला जा रहा है, इनमें से कई नौजवान आतंकवाद या नक्सलवाद की भेंट चढ़ के अपना बहुमूल्य जीवन बर्बाद कर देते हैं।

लेकिन इन सभी दुखद घटनाओं के बीच भी बहुत बड़े स्तर पर एक अनोखा प्रयास भी हो रहा है जो विश्व में अब तक का सबसे बड़ा और सफल प्रयास साबित हुआ है। पिछले दो दशकों से चुप चाप एक व्यक्ति ओडिशा राज्य की राजधानी भुवनेश्वर में, जहां कि भारत की सबसे अधिक आदिवासी प्रजातियां पाई जाती हैं। उनके जीवन को संवारने में लगा हुआ है। डॉ अच्युत सामंत नाम के इस व्यक्ति ने अपनी अद्वितीय सोच और दूरदर्शिता से वह कर दिखाया है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनके द्वारा वर्ष 1993 में स्थापित कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज में आज 20 हजार से भी अधिक आदिवासी बच्चे उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहां शिक्षा के साथ साथ रहने, भोजन तथा स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं का भी लाभ उठा रहे हैं। यह सब बिलकुल मुफ्त है। वहां जाकर देखने पर यह आभास होता है कि इन सभी बच्चों का डॉ सामंत से कोई रिश्ता है जो केवल ये बच्चे और डॉ सामंत ही समझ सकते हैं।

आप केआईएसएस द्वारा प्रशिक्षित कई छात्रों को देखेंगे जो बड़े बड़े संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम कर रहे हैं और राष्ट्र की तरक्की तथा उन्नति में भागी बन रहे हैं। ये वही बच्चे हैं जो शिक्षा के अभाव में आसानी से बरगलाए जा सकते थे, जिन हाथों में कोई समाज विरोधी काम करने के लिए हथियार थमा देता, डॉ सामंत ने उन्हीं हाथों में कलम थमा दी।

स्वयं अपने जीवन में अभाव को बहुत करीब से देखने वाले डॉ सामंत इन आदिवासी बच्चों को ज्ञान की ताकत से लैस कर रहे हैं। इनकी संस्कृति और धार्मिक आस्थाओं से छेड़-छाड़ नहीं की जाती। डॉ सामंत समय-समय पर इनके अभिभावकों को बुला कर उन्हें भी जागरूक करते हैं। मजे की बात यह है कि आज तक किसी भी बच्चे ने अपनी शिक्षा पूरी किए बिना केआईएसएस को नहीं छोड़ा है।

मात्र पांच हजार रुपए से डॉ सामंत ने कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी की शुरुआत 1992 में की थी, जो आज एक पूर्ण विश्वविद्यालय की शक्ल ले चुका है। इसी इंस्टीट्यूट से प्राप्त होने वाले लाभ का रुख डॉ सामंत ने केआईएसएस की ओर मोड़ दिया। अविवाहित डॉ सामंत स्वयं किराये के मकान में रहते हैं। उनके अनुसार मुनाफे की सबसे बड़ी परिभाषा भारत के हर गरीब बच्चे को शिक्षित करना ही है, अब वे अपने इस सपने का दायरा बढ़ाने को तत्पर हैं। उनके इस मॉडल से प्रभावित होकर, पिछले वर्ष दिल्ली सरकार ने भी गरीब बच्चों के लिए केआईएसएस, दिल्ली की शुरुआत की, जो सुचारू रूप से चल रहा है। डॉ सामंत का प्रयास है कि केआईएसएस की शाखाएं और राज्यों में भी खोली जाएं।

केआईएसएस के अधिकतर कार्यों में यूएनडीपी, यूनिसेफ, यूनेस्को, यूएनएफपीए और यूएस फेडरल गवर्नमेंट की भागीदारी से यह पता चलता है कि किस तरह इस संस्थान को विश्व विख्यात संस्थान विकास का एक उत्तम मॉडल स्वीकार करते हैं। विश्व के कई और देश भी इस संस्थान को विकास के एक सम्पूर्ण मॉडल के रूप में स्वीकृति देते हैं।

डॉ सामंत को समय समय पर अनेकों विशेष सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। वे यूजीसी के सदस्य भी हैं। डॉ सामंत कहते हैं, अथक परिश्रम, निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना और ईश्वरीय कृपा, इसी से सफलता संभव है। विश्व को एक नया और सफल मॉडल देने वाले इस मार्ग दर्शक का के जीवन का मूल मंत्र है कि जो भी अपने पास है उसे दूसरों को दे सकें। वे कहते हैं, अपने पूरे जीवन में मैंने इस बात को जिया है कि जो खुशी सुख देने में है वह दुनिया की किसी और चीज में नहीं है। इसी विचारधारा को मूर्त रूप देते हुए डॉ सामंत ने बीते वर्ष आर्ट ऑफ लिविंग की शुरुआत भी की है।